विज्ञापन

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
Airports Authority Of India

अपनी विविधता के लिए पहचाने जाने वाला भारत देश संस्कृति एवं विरासत की बहुलता का प्रतीक है। यह स्थानीय कलाओं के असंख्य रूपों से समृद्ध है, जो देश में अपनी सांस्कृतिक विविधता की पहचान के साथ-साथ अन्य संस्कृतियों के लिए भी अनुकरणीय है।

तिरुपति हवाई अड्डा

तिरुपति हवाई अड्डा : वास्तु संग संस्कृति का समागम

आधुनिक युग में हवाई अड्डा, हवाई यात्रा के आवागमन का केन्द्र ही नहीं बल्कि गंतव्य स्थान भी बन चुका है। चूंकि दूर-दराज से आने वाले यात्रियों के लिए हवाई अड्डा स्थानीय संस्कृति, सभ्यता और जीवनशैली से रूबरू होने का एक प्रवेश द्वार होता है, इसलिए यह आवश्यक है कि इसकी अमिट छवि और अनुभव यात्रियों को यादगार रहे और यही सब तिरूपति हवाई अड्डा पर देखने को मिलता है, जिसमें देश के विभिन्न स्थलों की यात्रा करने वाले सैलानियों को यहां के स्थानों की संस्कृति, प्रकृति और आस्था से अवगत करवाया जा रहा है।

यात्री और संस्कृति का संगम

किसी स्थान की छवि उसके गुण और विशेषताओं का एक अनूठा संग्रह होता है और ऐसा ही संग्रह तिरूपति हवाई अड्डा पर देखने को मिला है। यह सच है कि किसी स्थान का परिदृश्य, सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश ही उसकी पहचान बनाती है। ज़्यूरिख हवाई अड्डा इस बात का एक उत्कृष्ट

प्रस्थान क्षेत्र में गरुड़ की प्रतिमा

उदाहरण है। यहां एक टर्मिनल से दूसरे टर्मिनल तक जा रहे यात्रियों को गाय की धुन, एनिमेटेड हेइडी और इसी तरह की ध्वनि सुनाई देती है जिससे उन्हें स्विटजरलैंड में होने का एहसास होता है साथ ही भा0वि0प्रा0 के हवाई अड्डा पहले से ही इन संकल्पनाओं के साथ काम कर रहा है।

यात्री टर्मिनल भवन

आंध्र प्रदेश के तिरुपति हवाई अड्डा पर विशेष रूप से इस स्थान के ऐतिहासिक महत्व को ध्यान में रखते हुए गरुड़ के आकार में नए एकीकृत टर्मिनल भवन का निर्माण किया गया है। गरुड़ को भगवान वेंकेटेश्वर का वाहक माना जाता है, जो उड़ान का प्रतीक है एवं भगवान वेंकेटेश्वर को भगवान विष्णु का अवतार भी कहा जाता है। गरुड़ के आकार में निर्मित इस इमारत में आधुनिक इस्पात की संरचना, गरुड़ रूपी कला, विरासत और तिरुपति शहर के मंदिरों के महत्व को दर्शाया गया है।

प्रस्थान क्षेत्र में प्रतिमा

गरुड़ के रूप में कांस्य की एक सुंदर मूर्ति चेक-इन एरिया में रखी गई है। गरुड़ के विशाल पंखों के आधार पर भवन की अवधारणा को दर्शाते हुए उनकी मूर्ति रखी गयी है।

आधुनिक तरीके से दीवार पर बनी बालाजी की मूर्ति

अंतर्राष्ट्रीय आगमन पर भी एक कलाकृति है जो सिरेमिक हस्तकला का मेल है और इसमें भगवान बालाजी के नाममा (माथे पर व्यापक प्रतीक), जो भगवान विष्णु का एक अन्य अवतार है, जिसे यहां दर्शाया गया है। गहरे और चमकदार रंग टर्मिनल के अंदर मनोरम कृति प्रस्तुत करते हैं और बालाजी के दशावतार के साथ आधुनिक स्वरूप से यात्रियों के मन में जटिल डिजाइन की जिज्ञासा पैदा होती है। यात्री-सामान क्षेत्र में स्थित कलाकृति राजा कृष्ण देवराय के शासनकाल के दौरान हम्पी की संस्कृति और विरासत को दर्शाती है। कृष्ण देवराय काल की कहानी के साथ जुड़ा हुआ है।

राजा कृष्ण देवराय के शासनकाल की विरासत

भगवान बालाजी की आधुनिक संकल्पना